पाठ 2: राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

पाठ का सार (Summary):
यह प्रसंग गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचरितमानस' के 'बालकांड' से लिया गया है। राजा जनक द्वारा आयोजित सीता स्वयंवर में श्रीराम ने शिवजी के पुराने धनुष को तोड़ दिया। जब यह समाचार मुनि परशुराम को मिला, तो वे अत्यंत क्रोधित होकर सभा में आए। वे धनुष तोड़ने वाले को मारने की धमकी देने लगे। श्रीराम ने बहुत विनम्रता से उत्तर दिया, परन्तु लक्ष्मण ने व्यंग्यात्मक (मज़ाकिया) लहज़े में परशुराम का विरोध किया, जिससे परशुराम का क्रोध और भड़क गया। लक्ष्मण ने परशुराम को क्षत्रिय धर्म और शूरवीरता की याद दिलाई। अंत में, परशुराम के अत्यंत क्रोधित होने पर श्रीराम ने अपनी शील और शांत वाणी से परशुराम के क्रोध को शांत किया।

प्रश्न-अभ्यास (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. **परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?**

लक्ष्मण ने परशुराम को क्रोधित देखकर धनुष टूट जाने के निम्नलिखित तर्क दिए:

1. बचपन में तो हमने बहुत सी धनुहियाँ (छोटे धनुष) तोड़ी हैं, तब तो आपने कभी क्रोध नहीं किया। इसी धनुष पर आपकी इतनी ममता क्यों है?

2. हमारी नज़र में तो सभी धनुष एक समान होते हैं।

3. यह धनुष तो बहुत पुराना और कमज़ोर था। श्रीराम ने तो इसे बस नई आँखों से (नया समझकर) देखा ही था और उनके छूते ही यह टूट गया, इसमें राम का कोई दोष नहीं है।

4. एक पुराने धनुष के टूटने से न तो कोई लाभ होता है और न ही कोई हानि।

प्रश्न 2. **परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुईं उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।**

श्रीराम का स्वभाव: श्रीराम स्वभाव से बहुत शांत, विनम्र, शीलवान और मर्यादा-पुरुषोत्तम हैं। परशुराम के भयंकर क्रोध के सामने भी वे अपना आपा नहीं खोते और बहुत ही मीठी व आदरपूर्ण वाणी में बात करते हैं। वे स्वयं को परशुराम का 'दास' (सेवक) बताते हैं और बड़ों का सम्मान करना जानते हैं।

लक्ष्मण का स्वभाव: लक्ष्मण स्वभाव से उग्र, निडर, स्पष्टवादी और व्यंग्य करने वाले हैं। वे परशुराम के क्रोध और धमकियों से ज़रा भी नहीं डरते। वे अन्याय या अनुचित बातों का तुरंत कड़ा जवाब देते हैं। उनका वाक्चातुर्य बहुत तीखा है जो परशुराम के क्रोध की आग में घी का काम करता है।

प्रश्न 3. **लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।**

लक्ष्मण (हँसते हुए और व्यंग्य से): हे मुनिराज! बचपन में तो हमने खेल-खेल में ऐसी बहुत सी धनुहियाँ तोड़ डालीं, तब तो आपने हम पर कभी इतना क्रोध नहीं किया। आख़िर इसी धनुष से आपको इतना विशेष लगाव क्यों है?

परशुराम (अत्यंत क्रोधित होकर): अरे राजपुत्र! काल के वश में होने के कारण तुझे बोलने का होश नहीं है। तू शिवजी के इस विश्व-प्रसिद्ध धनुष की तुलना बचपन की छोटी धनुहियों से कर रहा है?

Schorbit

प्रश्न 4. **परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पद्यांश के आधार पर लिखिए-**

"बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित छत्रीकुल द्रोही॥
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही॥
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा॥"
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महेसकिसोर।
गरभन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर॥

इस पद्यांश के आधार पर परशुराम ने अपने बारे में निम्नलिखित बातें कहीं:

1. मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ और मेरा स्वभाव अत्यंत क्रोधी है। सारा विश्व जानता है कि मैं क्षत्रिय कुल का घोर शत्रु हूँ।

2. मैंने अपनी भुजाओं के बल से इस पृथ्वी को कई बार राजाओं (क्षत्रियों) से विहीन (रहित) कर दिया है और उस भूमि को ब्राह्मणों को दान में दे दिया है।

3. हे राजकुमार! मेरे इस भयानक फरसे को देख, जिसने सहस्रबाहु (हज़ार भुजाओं वाले राक्षस) की भुजाओं को काट डाला था।

4. तू अपने माता-पिता को शोक में मत डाल, क्योंकि मेरा यह फरसा इतना भयानक है कि इसके डर से ही गर्भवती स्त्रियों के गर्भ (बच्चे) गिर जाते हैं।

प्रश्न 5. **लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताईं?**

लक्ष्मण ने एक सच्चे वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताईं:

1. वीर योद्धा युद्ध भूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन कार्य करके दिखाते हैं, वे अपने मुँह से अपनी प्रशंसा (बड़ाई) स्वयं नहीं करते।

2. कायर लोग ही युद्ध के मैदान में शत्रु को सामने पाकर अपनी वीरता की डींगें हाँकते हैं।

3. सच्चे वीर धैर्यवान होते हैं और वे कभी क्रोध में आकर अपशब्द (गालियाँ) नहीं बोलते।

4. ब्राह्मण, गाय, देवता और भगवान के भक्त—इन चारों पर शूरवीर अपने शस्त्र नहीं उठाते।

Schorbit

प्रश्न 6. **साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।**

साहस और शक्ति मनुष्य के बहुत अच्छे गुण हैं, लेकिन यदि इनके साथ विनम्रता न हो तो मनुष्य अहंकारी और अभिमानी बन जाता है। परशुराम के पास साहस और शक्ति दोनों थे, परन्तु विनम्रता की कमी के कारण वे सभा में क्रोध और अहंकार का प्रदर्शन कर रहे थे, जिससे उनकी महानता कम हो रही थी। दूसरी ओर, श्रीराम में साहस और शक्ति कूट-कूट कर भरी थी, साथ ही वे अत्यंत विनम्र भी थे। उनकी विनम्रता ने ही आख़िरकार परशुराम के क्रोध को शांत किया। अतः यह सत्य है कि विनम्रता साहस और शक्ति को और अधिक निखारती है और व्यक्ति को पूजनीय बनाती है।

प्रश्न 7. **भाव स्पष्ट कीजिए-**

(क) बिहसि लखनु बोले मृदु बानी। अहो मुनीसु महाभट मानी॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उड़ावन फूँकि पहारू॥
(ख) इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं। जे तरजनी देखि मरि जाहीं॥
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
(ग) गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय, अजहुँ न बूझ अबूझ॥

(क) भाव: लक्ष्मण हँसकर और मीठी वाणी में (व्यंग्य करते हुए) कहते हैं कि हे मुनिश्रेष्ठ! आप तो स्वयं को बहुत बड़ा योद्धा मानते हैं। आप मुझे बार-बार अपना फरसा ऐसे दिखा रहे हैं जैसे आप फूँक मारकर पहाड़ को उड़ा देना चाहते हों। (अर्थात् लक्ष्मण परशुराम की धमकियों से डरने वाले नहीं हैं।)

(ख) भाव: लक्ष्मण कहते हैं कि हे मुनि! हम यहाँ कोई 'कुम्हड़े की बतिया' (सीताफल/कद्दू का कच्चा और कमज़ोर फल) नहीं हैं जो आपकी तर्जनी उँगली (अँगूठे के पास वाली उँगली) देखते ही कुम्हला जाएँगे या डर जाएँगे। मैंने तो आपके हाथ में फरसा और धनुष-बाण देखकर ही अभिमानपूर्वक कुछ बातें कही थीं (मुझे लगा कोई सच्चा योद्धा है)।

(ग) भाव: गाधिसूनु (विश्वामित्र) अपने मन-ही-मन हँसते हुए सोचते हैं कि मुनि परशुराम को हर जगह हरा ही हरा सूझ रहा है (यानी वे राम-लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय समझ रहे हैं)। मुनि यह नहीं जानते कि ये दोनों लोहे से बनी हुई मज़बूत खाँड़ (तलवार) हैं, न कि गन्ने (ईख) के रस से बनी खाँड़ जो मुँह में जाते ही पिघल जाए। मुनि अब भी इनकी असलियत को समझ नहीं पा रहे हैं।